वैदिक सामाजिक सौहार्द के समन्वयक - पण्डित दीनदयाल उपाध्याय

डॉ. रेनू शर्मा[1]

[1]सहायक प्राध्यापक - संस्कृत, टीकाराम यादव स्मृति स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मोठ (झांसी)

सारांश

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय समाज और राजनीति के एक महत्वपूर्ण विचारक थे, जिन्होंने 'एकात्म मानववाद' की अवधारणा प्रस्तुत की। उनके विचारों ने भारतीय राजनीति, समाज और अर्थव्यवस्था को एक नई दिशा दी, जो पश्चिमी विचारधाराओं से भिन्न थी। उन्होंने राष्ट्रवाद, लोकतंत्र, समाजवाद और पूंजीवाद की पारंपरिक परिभाषाओं की सीमाओं को उजागर किया और भारतीय संदर्भ में एक नई विचारधारा की आवश्यकता पर बल दिया। उनके विचारों में अंत्योदय की अवधारणा महत्वपूर्ण थी, जिसमें समाज के सबसे कमजोर व्यक्ति तक विकास की रोशनी पहुँचाने की बात कही गई। उन्होंने सामाजिक समरसता, आत्मनिर्भरता और भारतीय संस्कृति के अनुरूप नीतियों को बढ़ावा देने पर बल दिया। यह समीक्षा पत्र उनके विचारों के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण करता है।

कीवर्ड: पंडित दीनदयाल उपाध्याय, एकात्म मानववाद, अंत्योदय, राष्ट्रवाद, सामाजिक समरसता, आत्मनिर्भरता, वैदिक सामाजिक सौहार्द।

OPEN ACCESS

Volume: 4

Issue: 1

Month: March

Year: 2025

ISSN: 2583-7117

Published: 28.03.2025

Citation:

डॉ. रेनू शर्मा "**वैदिक सामाजिक सौहार्द के समन्वयक - पण्डित दीनदयाल उपाध्याय**" International Journal of Innovations in Science Engineering and Management, vol. 4, no. 1, 2025, pp. 358–365.

DOI:

10.69968/ijisem.2025v4i1358-365

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Share Alike 4.0 International License

परिचय

भारतीय संस्कृति में सामाजिक सौहार्द की अवधारणा अत्यंत प्राचीन है, जिसकी जड़ें वैदिक परंपरा में गहराई से निहित हैं। वेदों में वर्णित सिद्धांत न केवल आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं, बल्कि समाज के संगठन और समरसता के लिए भी मार्गदर्शन देते हैं। वैदिक समाज में विभिन्न वर्गों, जातियों और समुदायों के बीच समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया गया था, जिसमें धर्म, कर्तव्य और पारस्परिक सहयोग की प्रमुख भूमिका थी। (Suthar, 2023)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय विचारधारा के उन मनीषियों में से एक थे, जिन्होंने सामाजिक सौहार्द और एकात्म मानववाद की अवधारणा को नई दिशा दी। वेदों में निहित समरसता, सह-अस्तित्व और सामाजिक समन्वय के मूल्यों को उन्होंने आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया।

उनका "एकात्म मानववाद" का सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि समाज का प्रत्येक वर्ग परस्पर सहयोग और सम्मान के आधार पर उन्नति कर सकता है।

स्वतंत्रता के पश्चात, भारतीय समाज ने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनों का अनुभव किया, जिससे कई चुनौतियाँ उत्पन्न हुईं। जातिगत भेदभाव, आर्थिक असमानता और सांस्कृतिक विविधताओं के बीच संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गई। इस संदर्भ में, वैदिक सामाजिक सौहार्द और पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का अध्ययन न केवल ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में उपयोगी है, बल्कि समकालीन भारत में सामाजिक समरसता और विकास की दृष्टि से भी प्रासंगिक है।

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय – जीवन एवं विचारधारा

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितंबर 1916 को उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में हुआ था। बचपन में माता-पिता के निधन के कारण उनका जीवन कठिनाइयों से भरा रहा, लेकिन उन्होंने अपनी शिक्षा जारी रखी। उन्होंने पिलानी के बिरला कॉलेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और बाद में समाज सेवा की ओर अग्रसर हुए। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) के सक्रिय सदस्य बने और भारतीय समाज में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की भावना को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी संगठनात्मक क्षमताओं और राष्ट्रवादी विचारों ने उन्हें भारतीय जनसंघ के प्रमुख विचारकों में से एक बना दिया। 1967 में वे भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष बने और भारतीय राजनीति को एक नई दिशा दी। (पार्टी, 2015)

प्रमुख कार्य एवं उपलब्धियाँ

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय ने राजनीति, समाज और बौद्धिक जगत में अभूतपूर्व योगदान दिया। भारतीय जनसंघ के विकास में उनकी भूमिका अहम रही, और उन्होंने राजनीति को सत्ता प्राप्ति का साधन न मानकर समाज सेवा का माध्यम बनाया। उन्होंने सामाजिक समरसता और स्वदेशी अर्थव्यवस्था पर विशेष बल दिया, जिससे समाज के सभी वर्गों को समान अवसर मिल सके। (सिंहधीरज, 2018)

उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं, जिनमें "एकात्म मानववाद", "जगद्गुरु भारत", "राष्ट्र जीवन की समस्याएँ" और "अखंड भारत क्यों?" प्रमुख हैं। उनके विचारों ने भारतीय समाज की सांस्कृतिक और आर्थिक नीतियों को प्रभावित किया। उनका मानना था कि भारत को आत्मनिर्भर बनने के लिए स्वदेशी उत्पादन और विकेंद्रीकृत विकास की नीति अपनानी चाहिए। (त्रिपाठी, 2016)

उनकी विचारधारा का दार्शनिक आधार

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय की विचारधारा भारतीय संस्कृति और समाज के मूलभूत तत्वों पर आधारित थी। उन्होंने "एकात्म मानववाद" की संकल्पना प्रस्तुत की, जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के समग्र विकास पर बल देती है। उनके अनुसार, भारत को एक ऐसे मॉडल की आवश्यकता है जो केवल आर्थिक समृद्धि पर केंद्रित न होकर, नैतिकता, सांस्कृतिक मूल्यों और सामाजिक समरसता को भी महत्व दे। (रूबी, 2021)

उनका दर्शन यह दर्शाता है कि किसी भी राष्ट्र की स्थिरता और उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि उसकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक

व्यवस्थाओं में संतुलन बना रहे। वे मानते थे कि भारत को पश्चिमी नीतियों का अंधानुकरण करने के बजाय अपनी सांस्कृतिक परंपराओं के अनुरूप नीतियाँ अपनानी चाहिए।

तालिका 1

विचारधारा के प्रमुख सिद्धांत	विवरण
एकात्म मानववाद	व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का समग्र विकास
स्वदेशी अर्थव्यवस्था	स्थानीय उत्पादन और आत्मनिर्भरता पर बल
धार्मिक सहिष्णुता	सभी धर्मों और मतों को सम्मान देना
सामाजिक समरसता	जाति, धर्म और वर्गभेद से मुक्त समाज की स्थापना
राजनीतिक राष्ट्रवाद	भारतीय संस्कृति को केंद्र में रखकर राष्ट्र निर्माण

एकात्म मानववाद और वैदिक समाज

एकात्म मानववाद की संकल्पना

पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित "एकात्म मानववाद" भारतीय समाज की संस्कृति, परंपरा और आवश्यकताओं पर आधारित एक मौलिक दर्शन है। यह विचारधारा समाज, व्यक्ति और राष्ट्र के समग्र विकास पर बल देती है। उनका मानना था कि किसी भी समाज की स्थिरता और उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि उसकी आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक व्यवस्थाओं में समन्वय बना रहे।

एकात्म मानववाद का मूल उद्देश्य भारतीय समाज को उसकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़कर विकास की एक स्वदेशी अवधारणा प्रस्तुत करना था। यह विचार पश्चिमी पूंजीवाद और साम्यवाद के बीच एक संतुलित मार्ग प्रस्तुत करता है, जिसमें व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को एकात्मक रूप से देखा जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार, भारत की विकास प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिए जो केवल आर्थिक दृष्टि से नहीं, बल्कि नैतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी उन्नति प्रदान करे। (कुमारविनय & गुप्ता, 2022)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का यह मानना था कि पश्चिमी देशों की भांति भारत में पूंजीवादी या साम्यवादी व्यवस्था लागू नहीं की जा सकती क्योंकि भारत की सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक परंपराएँ भिन्न हैं। उनका विचार था कि भारतीय समाज में संतुलन और समरसता बनाए रखने के लिए स्वदेशी अवधारणाओं पर आधारित आर्थिक और सामाजिक नीतियाँ अपनाई जानी चाहिए।

वैदिक समाज में एकात्म मानववाद के तत्व

वैदिक समाज की संरचना सह-अस्तित्व, सामंजस्य और प्राकृतिक संतुलन पर आधारित थी। वैदिक ग्रंथों में सामाजिक सौहार्द, पारस्परिक सहयोग और नैतिक मूल्यों पर विशेष बल दिया गया है, जो एकात्म मानववाद के मूल सिद्धांतों से मेल खाता है। वैदिक परंपरा में प्रत्येक व्यक्ति को समाज का अभिन्न अंग माना गया है, और व्यक्ति तथा समाज के मध्य परस्पर निर्भरता का सिद्धांत स्थापित किया गया है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद की प्रमुख विशेषताएँ वैदिक समाज में पहले से ही विद्यमान थीं। वेदों में वर्णित पुरुष सूक्त में समाज के विभिन्न

वर्गों का उल्लेख किया गया है, जिसमें प्रत्येक वर्ग को समाज की स्थिरता और समृद्धि के लिए आवश्यक माना गया है। इस दृष्टिकोण से, भारतीय समाज को एक समग्र इकाई के रूप में विकसित किया गया, जहाँ सभी वर्गों को अपनी भूमिका निभाने का समान अवसर दिया गया। (सुनीता, 2020)

तालिका 2

एकात्म मानववाद के सिद्धांत	वैदिक समाज में प्रासंगिकता
व्यक्ति का समाज से अभिन्न संबंध	वैदिक ग्रंथों में वर्णन कि व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग है
स्वदेशी अर्थव्यवस्था	वैदिक काल में कृषि, व्यापार और शिल्प आधारित स्वावलंबन
सामाजिक समरसता	जाति और वर्ग भेद से ऊपर उठकर धर्म और कर्तव्यों पर बल
नैतिकता और आध्यात्मिकता	वेदों में नैतिकता और धर्म का विशेष महत्व
संपूर्ण विकास का सिद्धांत	केवल आर्थिक नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति भी आवश्यक

वैदिक समाज में "वसुधैव कुटुंबकम्" की संकल्पना इसी विचारधारा का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है, जिसमें संपूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देखा गया है। यह विचार पंडित दीनदयाल उपाध्याय की एकात्म मानववाद की अवधारणा से पूरी तरह मेल खाता है, जहाँ व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को एक समग्र इकाई माना गया है।

सामाजिक समरसता और एकात्म मानववाद का संबंध

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार, समाज का प्रत्येक वर्ग परस्पर सहयोग और समरसता से जुड़ा हुआ है। उनका मानना था कि सामाजिक समरसता तभी संभव है जब प्रत्येक वर्ग को समान अवसर और गरिमा प्राप्त हो। उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक असमानता को समाप्त करने और सभी वर्गों को समान अधिकार देने की आवश्यकता पर बल दिया।

वैदिक समाज में सामाजिक समरसता का महत्वपूर्ण स्थान था। वेदों में उल्लेख मिलता है कि समाज के प्रत्येक अंग का कल्याण तभी संभव है जब सभी वर्ग मिलकर कार्य करें और एक-दूसरे का सहयोग करें। इसी विचार को पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने अपने एकात्म मानववाद में समाहित किया, जहाँ समाज के विभिन्न अंगों को एक जीवंत इकाई के रूप में देखा गया। (कुमारसुनील, 2021)

एकात्म मानववाद केवल एक दार्शनिक विचार नहीं था, बल्कि यह भारतीय समाज के व्यावहारिक सुधार के लिए एक दिशानिर्देश भी था। यह सिद्धांत वर्तमान समय में भी अत्यंत प्रासंगिक है, जब सामाजिक विभाजन और आर्थिक असमानता की चुनौतियाँ बढ़ रही हैं।

सामाजिक सौहार्द में पण्डित दीनदयाल उपाध्याय का योगदान

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय समाज की एकता और समरसता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका मानना था कि समाज को केवल आर्थिक उन्नति के आधार पर नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों के साथ विकसित किया जाना चाहिए। उन्होंने "एकात्म मानववाद" की संकल्पना प्रस्तुत की, जिसमें व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को एक इकाई के रूप में देखा गया। उनके विचारों में सामाजिक

समरसता, स्वदेशी अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय स्वाभिमान का विशेष महत्व था। सामाजिक असमानता के समाधान के लिए उन्होंने शिक्षा, स्वावलंबन और समान अवसरों की वकालत की। उनके अनुसार, समाज के सभी वर्गों को समान अधिकार और सम्मान मिलना चाहिए ताकि सामाजिक संतुलन बना रहे। उन्होंने जाति, धर्म और वर्ग के भेदभाव को समाप्त करने पर बल दिया और समाज में सहयोग और सह-अस्तित्व की भावना को प्रोत्साहित किया। समकालीन संदर्भ में उनके विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं, विशेष रूप से जब वैश्वीकरण और आधुनिकता के प्रभाव से समाज में विभिन्न चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। उनके विचारों को अपनाकर सामाजिक समरसता को बढ़ावा दिया जा सकता है, जिससे राष्ट्र की एकता और विकास सुनिश्चित हो सके। (कुमारसुनील, 2022)

तालिका 3

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक सौहार्द में योगदान	मुख्य विचार
सामाजिक एकता	जाति, धर्म और वर्गभेद से ऊपर उठकर समाज की एकता पर बल
शिक्षा और स्वावलंबन	समाज के हर वर्ग को समान अवसर और शिक्षा प्राप्त करने की आवश्यकता
समानता और न्याय	सभी नागरिकों को समान अधिकार और गरिमा प्रदान करने की वकालत
राष्ट्रीय स्वाभिमान	भारतीय संस्कृति और मूल्यों को सहेजते हुए राष्ट्र निर्माण पर जोर
समकालीन प्रासंगिकता	वैश्वीकरण और आधुनिक समाज में उनके विचारों की महत्वपूर्ण भूमिका

साहित्य की समीक्षा

(सिंहविना, 2020) दीन दयाल उपाध्याय राजनेता मात्र नही थे वह उच्चकोटि के चिन्तक, विचारक और लेखक भी थे। इस रूप में उन्होंने सर्वश्रेष्ठ शक्तिशाली और संतुलित रूप में विकसित राष्ट्र की कल्पना की थी उन्होंने अपने स्वयं के सुख, सुविधाओं को त्याग दिया था। व्यक्तिगत जीवन से स्वयं की कोई महत्वाकांक्षा नही था। उन्होंने अपना जीवन समाज और राष्ट्र को समर्पित कर दिया था, या ये कहे कि समूल न्यौछावार हो गए थे। यही तथ्य उन्हें महान बनाती है। राजनीति में लगातार सक्रियता के बाद भी वह अध्ययन एवं लेखन के लिए सदैव समय निकालते थे। इसके लिए वह अपने विश्राम, आराम के समय कटौती करते थे। इसी दौरान लोगों से मिलना जुलना भी लगा रहता था और साथ ही अनवरत यात्रा भी चलती रहती थी, आम लोगों के बीच रहना उन्हें अच्छा लगता था। शायद यही कारण था कि वह देश के आम व्यक्ति की समस्याओं को भली-भाँति समझ चुके थे। यह विषय उनके चिंतन व अध्ययन में भी समाहित था। उनका व्यक्तित्व व कृतित्व बहुआयामी है। विभिन्न रूप में उनसे प्रेरणा प्राप्त किया जा सकता है। समाज सेवाओं व राजनीति में जुड़े व्यक्ति उनसे प्रेरणा ले सकते हैं।

(शर्मा, 2024) पंडित दीन दयाल उपाध्याय की दृष्टि में अंत्योदय वर्तमान पिछड़े वर्गों के विकास के लिए चलाई जा रही आरक्षण व्यवस्था में आकाश पाताल का अन्तर है। इसलिए ही पिछड़ों का उत्थान सही रीति नहीं हो पा रहा है। गुणता तथा मेधा के क्षेत्र में अनुसूचित समुदाय के लोग सामान्य वर्गों से काफी पिछड़े हुए ही रहते हैं। बल्कि गुणवत्ता के मामले में इन समुदायों को लोग दिनों दिन और भी ज्यादा पिछड़ रहे हैं। लगता है वर्तमान व्यवस्था रही तो वे युगों-युगों तक पिछड़े ही नहीं बने रहेंगे, बल्कि कहीं और भी ज्यादा पिछड़ते जाएंगे। भले ही आर्थिक या अन्य सुविधाओं के

मामले में वे सामान्य वर्ग के बराबर या उनसे अधिक उन्नत क्यों ने हो जाए।

(सिंहविवेक कुमार, 2021) दीनदयाल द्वारा स्थापित एकात्म मानववाद की अवधारणा पर आधारित राजनीतिक दर्शन भारतीय जनसंघ (वर्तमान भारतीय जनता पार्टी) एक उपहार है। उनके अनुसार, एकात्म मानववाद प्रत्येक मनुष्य के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का एक एकीकृत कार्यक्रम होता है। उन्होंने कहा कि भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में पश्चिमी अवधारणाओं जैसे व्यक्तिवाद, जनतंत्र, समाजवाद, साम्यवाद और पूंजीवाद पर निर्भर नहीं हो सकता। उनका विचार था कि भारतीय बुद्धि पश्चिमी सिद्धांतों से प्रभावित थी और विचारधाराओं से घुटन महसूस होती है। परिणामस्वरूप मौलिक भारतीय विचारधारा का विकास और विस्तार में बहुत बाधा है। एकात्म मानववाद, भारत के रूप में पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने तत्कालीन राजनीति और समाज को उस दिशा में मुड़ने की सलाह दी है जो सौ प्रतिशत भारतीय है।

(लेहरी, 2012) दीनदयाल उपाध्याय जी द्वारा प्रणीत भारतीय चिन्तन के विचार एकात्म मानववाद' की उद्घोषणा के आज 50 वर्ष पूर्ण हो रहे है। दीनदयाल जी ने सबसे पहले जून 1964 के संघ शिक्षा वर्गों में इसकी तत्व मीमांसा थी। उन्नीसवीं व 20वीं सदी में भारतीय विचार मंथन में पौर्वात्य एवं पाश्चात्य विचारों का द्वंद प्रखरता पूर्वक रेखांकित हुआ है। स्वामी विवेकानन्द ने सामान्यतः इसे प्रारम्भ किया। लोकमान्य तिलक ने 'गीता रहस्य' के माध्यम से इसे आगे बढाया तथा पुनः 1909 ई0 में महात्मा गांधी ने अपने 'हिन्द स्वराज' में इसी विषय को प्रमुखता से उठाया। दीनदयाल उपाध्याय ने भी अपने प्रथम बौद्धिक वर्ग में इसी का विवेचना किया है।

(प्रसाद & गोंड, 2024) अपने राष्ट्र के विकास को जागृत करने वाले एकात्म मानववाद के प्रणेता सच्चे देभक्त एवं हमारे पथ-

प्रदर्शक पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के कृत्यों एवं विचाराधाराओं ने हमारे देश को आसमान की बुलंदियों तक पहुँचाता है और वे निश्चित रूप से भारतीय राजनीति चिंतन और राजनीतिक मुद्दों में गहरी रूचि रखने वाले व्यक्ति थे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक एवं सामाजिक चिंतन की मूल अवधारणा एकात्म मानववाद के विचार के साथ जुड़ी हुई है। पंडित दीनदयाल जी का मानना था कि पश्चिमी सामाजिक, राजनीतिक विचार के प्रमुख समुदाय पश्चित में ही मानवीय स्थिति को मौलिक रूप से सुधारने में विफल रहे है। इस कारण उनका मानना था कि राष्ट्रवाद, लोकतंत्र और समाजवाद, उनकी राय में कई भारतीयों द्वारा अनजाने में स्वीकार किए गए थे। इन्होंने अच्छे जीवन के लिए मानवीय खोज को केवल, आंशिक समाधान ही प्रदान किये हैं और राष्ट्रवाद ने 'विश्व शांति' के लिए खतरा पैदा कर दिया। जब लोकतंत्र को पूंजीवाद से जोड़ा गया, तो उसने शोषण को शासन के साथ जोड़ दिया गया। समाजवाद, लोकतंत्र-पूंजीवाद से जुड़ी अवधारणा की प्रतिक्रिया ने व्यक्ति की गरिमा और स्वतंत्रता को लूट लिया है। इन राजनीतिक अवधारणाओं में से प्रत्येक पर बल देते हुए उन्होंने कहा था, कि इन अवधारणाओं ने भौतिक अधिग्रहण को बढ़ा दिया। इस तरह लालच, वर्ग विरोध, शोषण और सामाजिक अराजकता को प्रेरित किया। इसके परिणामस्वरूप उन्होंने न केवल सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की

विचारधाराओं के लिए कैडर तैयार किया बल्कि अपने द्वारा प्रतिपादित आदर्शों को साकर करने के लिए संगठन का एक मजबूत आधार भी दिया।

तालिका 4

लेखक (वर्ष(	**अध्ययन का सारांश**
सिंहविना)2020)	दीनदयाल उपाध्याय केवल राजनेता नहीं थे, बल्कि उच्चकोटि के चिंतक और विचारक थे। उन्होंने राष्ट्र के सर्वांगीण विकास की कल्पना की और अपने जीवन को समाज और राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया। अध्ययन और लेखन के लिए वे सदैव समय निकालते थे, जिससे उन्हें आम जनता की समस्याओं को समझने में सहायता मिली।
शर्मा)2024)	उपाध्याय की दृष्टि में अंत्योदय और वर्तमान आरक्षण नीति के बीच अंतर है। वे मानते थे कि मौजूदा व्यवस्था पिछड़े वर्गों को सशक्त बनाने में विफल रही है, क्योंकि यह केवल आर्थिक पहलुओं पर केंद्रित है, जबकि गुणवत्ता और मेधा के स्तर पर पिछड़े वर्गों को अधिक समर्थन की आवश्यकता है।
सिंहविवेक कुमार)2021)	एकात्म मानववाद की अवधारणा पर आधारित राजनीतिक दर्शन भारतीय जनसंघ अब भारतीय जनता) को एक (पार्टी विचारधारा के रूप में विकसित करता है। उपाध्याय का मानना था कि भारत को पश्चिमी विचारधाराओं पर निर्भर नहीं रहना चाहिए, बल्कि अपने मौलिक सिद्धांतों पर चलना चाहिए।
लेहरी)2012)	दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रस्तुत 'एकात्म मानववाद' भारतीय चिंतन का महत्वपूर्ण पहलू है। यह विचारधारा पश्चिमी और पूर्वी विचारों के द्वंद्व के बीच भारतीय संस्कृति के अनुरूप सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मार्गदर्शन प्रदान करती है।
प्रसाद एवं गोंड)2024)	उपाध्याय के एकात्म मानववाद ने भारतीय राजनीति और समाज को प्रभावित किया। उन्होंने पश्चिमी राजनीतिक अवधारणाओं की आलोचना की और भारतीय संदर्भ में एक नए दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बल दिया। वे मानते थे कि पूंजीवाद, समाजवाद और लोकतंत्र की पश्चिमी व्याख्याएँ भारतीय समाज के अनुरूप नहीं हैं।

निष्कर्ष

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय राजनीति, समाज और अर्थव्यवस्था के एक प्रमुख विचारक थे, जिनकी विचारधारा ‘एकात्म मानववाद’ पर आधारित थी। उन्होंने भारत को पश्चिमी राजनीतिक और आर्थिक सिद्धांतों की नकल करने के बजाय अपनी सांस्कृतिक और सामाजिक जड़ों के अनुरूप एक विशिष्ट मार्ग अपनाने की प्रेरणा दी। उनके विचारों में राष्ट्रवाद, समाजवाद, लोकतंत्र और पूंजीवाद की पश्चिमी अवधारणाओं की सीमाओं की स्पष्ट आलोचना देखने को मिलती है।

उनका मानना था कि राष्ट्र के वास्तविक विकास के लिए समाज के अंतिम व्यक्ति तक संसाधनों और अवसरों की समान पहुँच सुनिश्चित की जानी चाहिए। उन्होंने अंत्योदय के माध्यम से समाज के कमजोर वर्गों के सशक्तिकरण की वकालत की, लेकिन इसे केवल आरक्षण तक सीमित नहीं किया। उन्होंने भारतीय राजनीति को एक नई दिशा दी, जहाँ सामाजिक समरसता और आत्मनिर्भरता पर बल दिया गया।

आज के संदर्भ में, उपाध्याय के विचार और दर्शन न केवल प्रासंगिक हैं, बल्कि भारत के समावेशी विकास के

लिए मार्गदर्शक भी हैं। उनका चिंतन सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समरसता के सिद्धांतों पर आधारित था, जो भारत को आत्मनिर्भर और सशक्त राष्ट्र बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

संदर्भ

[1] Suthar, H. R. (2023). Analysis of political views of Pandit Deendayal Upadhyay. RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary, 8(5), 182–185. https://doi.org/10.31305/rrijm.2023.v08.n05.024

[2] कुमारविनय, & गुप्तामनीषा. (2022). पंडित दीनदयाल उपाध्याय का शैक्षिक एव सामाजिक चिंतन. 9(1), 21–24.

[3] कुमारसुनील. (2021). पंडित दीनदयाल उपाध्याय संक्षिप्त जीवन परिचय. 5–11.

[4] कुमारसुनील. (2022). पंडित दिनदयाल उपाध्याय जी के स्वदेशी आर्थिक चिंतन का समीक्षात्मक विश्लेषण. 79–83.

[5] त्रिपाठीसुशील कुमार. (2016). एकात्म मानववाद और पं. दिनदयाल उपाध्याय. KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS,HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES, 402–422.

[6] पार्टीभारतीय जनता. (2015). पंडित दिनदयाल उपाध्याय. 4(1), 1–23.

[7] प्रसादप्रो. गोपाल, & गोंडराजन कुमार. (2024). पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों का व्यापक विश्लेषण. 6(2), 1–7.

[8] रूबी. (2021). शिक्षा के छेत्र में पंडित दिनदयाल उपाध्याय के विचार. February 2020.

[9] लेहरीविमल कुमार. (2012). वैश्विक दार्शनिक दार्शनिकों में एकात्म मानववाद संकल्पना का उद्गम: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. April.

[10] शर्माराकेश. (2024). पंडित दिनदयाल उपाध्याय की दृष्टि में अंत्योदय भारत.

[11] सिंहधीरज. (2018). पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रणीत एकात्म मानव दर्शनः एक परिचय. 4, 40–48.

[12] सिंहविना. (2020). पंडित दीन दयाल उपाध्याय के विचार और दर्शन. Sanskritik Aur Samajik Anusandhan, 33–35.

[13] सिंहविवेक कुमार. (2021). पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद विवेक. International Journal of Sociology and Political Science, 3(2), 1–5.

[14] सुनीता. (2020). पंडित दिनदयाल उपाध्याय: राष्ट्रवादी पत्रकारिता के पुरोधा. Journal GEEJ, 7(2).